

प्रेस विज्ञप्ति

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय

19 नवंबर 2025

नई दिल्ली

सीएजी ने 32वें महालेखाकार सम्मेलन का समापन किया, एक नवीन उत्कृष्टता केंद्र एवं उन्नत आंकड़ा-केंद्रित लेखापरीक्षा सहित एक परिवर्तनकारी पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गई

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) कार्यालय द्वारा आयोजित 32वाँ महालेखाकार सम्मेलन आज नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ। दो दिवसीय इस उच्च-स्तरीय सम्मेलन में भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग (आईएएंडएडी) के शीर्ष प्रबंधन एवं देशभर से आए 100 से अधिक महालेखाकारों एवं विभागाध्यक्षों ने सहभागिता की। [परिवर्तन का नेतृत्व एवं मूल्यों की पुनर्पुष्टि: विश्वास, नवाचार, स्थिरता, उत्तरदायित्व] विषय पर केंद्रित इस सम्मेलन ने भारत की सार्वजनिक लेखापरीक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण, दूरदर्शी एवं भविष्योन्मुख कार्ययोजना प्रस्तुत की।

विचार-विमर्श को प्रतिष्ठित बाह्य विशेषज्ञों की अंतर्दृष्टि ने समृद्ध बनाया। इनमें प्रो. के. श्रीनाथ रेड्डी, जिन्होंने 'भारत में जन स्वास्थ्य' विषय पर मुख्य सम्बोधन दिया तथा श्री सौरभ के. तिवारी, अतिरिक्त सचिव कैबिनेट सचिवालय जिनके द्वारा 'प्रत्यक्ष लाभ अंतरण' पर केंद्रित एक सत्र लिया गया, जिसमें जटिल शासन चुनौतियों के समाधानों के लिए संस्थान के सहयोगात्मक दृष्टिकोण को उजागर किया गया,

सम्मिलित थे । अपने समापन संबोधन में भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक, श्री के. संजय मूर्ति ने संस्थान के एक दृष्टिकोण को रेखांकित किया, जो विकसित भारत 2047 की दिशा में राष्ट्र की यात्रा में एक आंकड़ा -संचालित, तकनीकी रूप से उन्नत एवं प्रगतिशील भागीदार होगा।

संस्थागत सुदृढीकरण: हैदराबाद में एक नवीन उत्कृष्टता केंद्र

संस्थान की भावी रणनीति का एक प्रमुख आधार गहन एवं विशिष्ट क्षमताओं के निर्माण पर बल देना है। इसी संदर्भ में, सम्मेलन की एक महत्वपूर्ण घोषणा हैदराबाद में वित्तीय लेखापरीक्षा हेतु उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना रही। इस राष्ट्रीय केंद्र का उद्देश्य वित्तीय लेखापरीक्षा के क्षेत्र में नवाचार, अनुसंधान एवं व्यावसायिक विकास को बढ़ावा देते हुए इसे राष्ट्रीय स्तर पर अग्रणी संस्थान के रूप में विकसित करना है।

यह केंद्र वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं के लिए एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करेगा—उन्नत कौशल विकास को प्रोत्साहित करते हुए सम्पूर्ण विभाग में उच्च-गुणवत्ता वाली वित्तीय लेखापरीक्षा पद्धतियों के मानकीकरण को आगे बढ़ाएगा। यह महत्वपूर्ण संस्थागत निवेश राजकोषीय विश्वास व पारदर्शिता की आधारशिला को सुदृढ करने की प्रतिबद्धता का स्पष्ट प्रमाण है। विशेषज्ञता के एक समर्पित केंद्र का निर्माण कर, सीएजी संस्था अपने सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थान के रूप में अपनी भूमिका को सुदृढ कर रही है, ताकि उसकी लेखापरीक्षा प्रथाएँ न केवल वैश्विक उत्कृष्टता एवं सत्यनिष्ठा के मानकों को पूरा करें, बल्कि उन्हें स्थापित करने में भी अग्रणी भूमिका स्थापित करें।

अनुसंधान और शैक्षणिक सहयोग को बढ़ावा देने की दिशा में एक कदम के रूप में, सम्मेलन ने भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICSSR) के सहयोग से संचालित होने वाले अनुसंधान के लिए एक नई पुरस्कार योजना का भी अनावरण किया। इस रणनीतिक पहल का उद्देश्य सार्वजनिक वित्त एवं उत्तरदायित्व में उच्च-गुणवत्ता वाले अनुसंधान को प्रोत्साहित करना है। ये पुरस्कार चार प्रमुख विषयगत

क्षेत्रों पर केंद्रित होंगे, जिन्हें कार्यान्वयन योग्य अंतर्दृष्टि उत्पन्न करने और सार्वजनिक लेखा परीक्षा के सैद्धांतिक आधार को मजबूत करने के लिए अभिकल्पित किया गया है।

आंकड़ा आधारित लेखापरीक्षा एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से लेखापरीक्षा की पुनर्कल्पना

यह सम्मेलन आंकड़ा व कृत्रिम बुद्धिमत्ता की संपूर्ण क्षमता का उपयोग करते हुए लेखापरीक्षा पद्धतियों में व्यापक परिवर्तन लाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण रणनीतिक केंद्रबिन्दु सिद्ध हुआ। नेतृत्व ने विभाग के लेखा कार्यालयों को मूल्यवान वित्तीय आंकड़ों का भंडार मानते हुए लेखापरीक्षा एवं लेखा प्रकार्यों के मध्य विद्यमान अंतर को कम करने हेतु एक स्पष्ट मार्गदर्शन जारी किया । इसका उद्देश्य लेखापरीक्षा एवं लेखा के मध्य की सीमाओं को एक अखंड सेतु में बदलना है, ताकि लेखापरीक्षा दल वाउचर, स्वीकृतियों एवं चालानों सहित विस्तृत आंकड़ों का व्यवस्थित एवं प्रभावी उपयोग अपने कार्य के लिए कर सके।

पारंपरिक नमूना-आधारित लेखापरीक्षण से संपूर्ण आंकड़ा सेट के अधिक व्यापक एवं समग्र विश्लेषण की ओर विस्थापन, एक मौलिक बदलाव का प्रतीक है। यह गहन एकीकरण अत्याधुनिक तकनीक द्वारा संचालित होगा। सम्मेलन में स्वदेशी रूप से निर्मित वृहद भाषा मॉडल, सीएजी-एलएलएम के विकास एवं उन अग्रणी परियोजनाओं की झलकियाँ दी गईं जहाँ लेखापरीक्षण हेतु कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग किया गया है। यह मात्र स्वचालन तक सीमित नहीं है; यह कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित विश्लेषण का उपयोग करते हुए भविष्य सूचक अंतर्दृष्टि, विसंगतियों का अभिनिर्धारण, एवं अत्यधिक सटीक जोखिम आकलन संभव बनाना है। गहन आंकड़ा तालमेल को कृत्रिम बुद्धिमत्ता –संचालित वैश्लेषिकी के साथ जोड़कर, सीएजी कहीं अधिक प्रभावी,

अधिक केंद्रित एवं साक्ष्य-आधारित लेखापरीक्षा करने के लिए स्वयं को तैयार कर रहा है।

परिवर्तन का नेतृत्व, मूल्यों की पुनर्पुष्टि: राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के प्रति नवीनीकृत प्रतिबद्धता

संस्थागत उत्कृष्टता एवं तकनीकी नवाचार के ये परिवर्तनकारी स्तंभ सम्मेलन के व्यापक विषय में सहज रूप से समाहित हैं। आंकड़ा एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता में गहन शोध नवाचार की प्रगतिशील भावना को दर्शाता है, जबकि लेखापरीक्षा में पर्यावरणीय, सामाजिक एवं शासन संबंधी (ईएसजी) मानदंडों को एकीकृत करने पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित करना स्थिरता के प्रति प्रतिबद्धता को चिन्हित करता है।

ये पहल अपने आप में साध्य नहीं हैं, बल्कि सुशासन के एक प्रमुख प्रवर्तक एवं राष्ट्रीय प्राथमिकताओं को प्राप्त करने में एक विश्वसनीय भागीदार के रूप में संस्थान की भूमिका को बढ़ाने हेतु हैं। भविष्य की लेखापरीक्षा नागरिक-केंद्रित क्षेत्रों जैसे जीवन की सुगमता, व्यवसाय करने में सहजता एवं आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (एफएलएन) पर केंद्रित होंगी, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सार्वजनिक नीति के लाभ उनके इच्छित लाभार्थियों तक पहुँचें। इसके अतिरिक्त, विभाग स्वायत्त निकायों की क्षमता निर्माण और लेखापरीक्षा निगरानी को बढ़ाने के लिए एक व्यापक मूल्यांकन मैट्रिक्स विकसित करने के प्रयासों का नेतृत्व कर रहा है।

अंत में, 32वां महालेखाकार सम्मेलन एक निर्णायक क्षण का द्योतक है। विश्वास, उत्तरदायित्व एवं जनसेवा के मूल्यों में निहित, यह संस्था अब आंकड़ा -संचालित तकनीकों, कृत्रिम बुद्धिमत्ता -सक्षम अंतर्दृष्टि एवं विशिष्ट दक्षताओं में निर्भीक कदम रख रही है। नागरिकों के लिए महत्वपूर्ण परिणामों पर विशेष ध्यान केंद्रित करते हुए, सीएजी एक सतत एवं भविष्य के लिए तैयार लेखापरीक्षा संस्थान बनने की

अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है, जो न केवल सार्वजनिक संसाधनों की सुरक्षा करता है, बल्कि विकसित भारत 2047 की दिशा में एक पारदर्शी, दक्ष व समावेशी शासन पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में भी सक्रिय योगदान देता है।

BSC/SS/IK/81-25